क) आलावा में जीवित रहना मुतुय से अधिक कष्टकर हैं क्योंकि ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन के रहस्य खोजने हैं और मनुष्य की उसकी पहचान सिद्ध है। शिक्षा मनुष्य यह जान देती है तथा मस्तिष्क और देह का उद्देश्य प्रयोग सिद्धाती है।

ब) शिक्षा के कई लाभ हैं, जैसे -

1. शिक्षा मनुष्य तथा समाज के विकास हेतु अत्यन्त उपयोगी हैं क्योंकि वह रूप मनुष्य की उसकी पहचान के अलावा जीवन के अनेक रहस्यों से आवश्यक करती हैं तथा कुछ गंभीर चिंतन भी देती हैं।

2. शिक्षा ही मनुष्य की मस्तिष्क और देह का उद्देश्य प्रयोग करना सिद्धाती है। शिख्या रूप मनुष्य की सुखस्तुत, सकार, सच्चारित्र स्वरूप आचार नागरिक भी बनाती है।

व) अधिकारों और कर्त्तव्यों का पारस्परिक संबंध यह है कि एक शिक्षित व्यक्ति की अपने अधिकारों जितना ही अपने उत्तरदायित्वों और कर्त्तव्यों का भी ह्यान रहना चाहिए क्योंकि रूप मनुष्य अपने
उतरदायित्व निष्पादने और कर्तव्य करने के बाद ही, अधिकार
पाने का अधिकारी बनता है।

घ)
शिक्षा क्षितिज और समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है। क्योंकि
एक व्यक्ति के तौर पर ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन के सहायक बनते हैं
और एक व्यक्ति अपनी पहचान पाता है। एक समाज के लिए
शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि वह मनुष्य की समस्याओं को शुल्क कर
साध्य, सार्वजनिक रूप से अद्वितीय नागरिक बनाती है तथा मनुष्य के
अत्मिक जीवन देती है।

ड)
उपयुक्त शिक्षा का उचित शीर्षक "शिक्षा और उसके दृष्टिकोण" ही
रक्षक है।

रॉ - 2

क)
समुद्र से आत्मियों धीरे-धीरे अपने से किसी का वह तान्त्रिक है कि लक्ष्मी-भारत
वासियों अपनी अलग-अलग आत्मियों तथा अपनी प्रांतों की सीमाओं
को भूलता होगा उन्हें हर तरह तथा हर स्थान से निकल देना होगा।
तथा बस इतना स्मरण रखना होगा ही हम सब सिक्ख हिंदुस्तानी हैं। भाल ही भारत देश ने हर आति की अपनाई तो हम भी हर आति भूलकर सिक्ख भारत की अपनाई।

(ख) 'बस रक ही मंदिर ही हमारा' से कवि का आशय है कि हर भारत के वासी की अपने अलग आत्मा-अलग धर्मों की भूलकर रक साथ रक ही धर्मों के नीचे रहना होगा और वह धर्म होगा हिंदुस्तानी और इस रक धर्म न की अलग ही मंदिर ही और वह हो हमारी सांस्कृतिक हमारे भारत देश। इस मंदिर की रक है हम रह हिंदुस्तानी सदैव तपते हैं।

(ण) हमारी अलग अलग पहचान हैं क्योंकि हमारी सांस्कृतिक हमारे देश ने हम संतानों बिना आत्मा-धर्म की पहचान किर पाना है और हमारी हर आवश्यकता की पूरा किया है।

हमारी अलग अलग पहचानों की रक में संबंध जा रहकता है और वह हम हमारे हिंदुस्तानी धर्म में जिसका सिक्ख रक मंदिर होगा, यह पूरी देश नहीं पर हर पहचान मिट जाएगी और याद रहेगी सिक्ख देशभक्ति।
शाहद के पद बनाने पर यह परिवर्तन होता है कि उस शाहद की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है तथा ताकः मे प्रकृत होकर वह शाहद कोई - न - कोई प्रकाशी अवश्य करता हैं तथा उस शाहद में कोई न - कोई सप - साधक या शाहद - साधक आधित शून्य प्रत्यय अवश्य करता हैं।

उदाहरण

'लड़का ' एक शाहद है।
ताकः मे प्रथुकत होते हो,

लड़का विद्यालय जाता हैं।

लड़का मे सृज शून्य प्रत्यय लगा जाता हैं तथा यह संज्ञा का प्रकाशी कर रहा हैं और अब यह शाहद न रक्कर पद बन गया हैं।
प्र० ३  
क) सूर्योदय होते ही चिंति काहीही लगी।
ख) जब तत्त्वाच दागीये से जिला तब उसके जीवन से परिवर्तित आता।
छ) जब नील कच्ची होती है तब मकान कमजोर रहता है।

प्र० ४  
क (क) भारोध - मद्द से अंधा (अधिकरण के पुनर्स्थल समास)
ख (iii) परीक्षण - पर (दूसरे) पर उपकर अधिकरण के पुनर्स्थल समास
ख (ii) कमीले जैसे चरण - चरण कमीले (कमील धारण समास)
ख (iii) कर्या का दान - कर्यादान (संबंध के पुनर्स्थल समास)
क) भाई साहब फैल और से पास हो गया।

ग) आप जब मिलने आएं तब फोन कर लीजिये।

घ) हमने तो घर पहुंचते ही सारी बात बता दी थी।

ड) लड़कियों की समझाएँगी तो वे मान जाएँगी।

ख) भारतीय सैनिकों ने दुश्मन के हुक्के छुड़ा दिए।
क)
छोटे भाई की बड़े भाई की बातों से लघुता का अनुभव तब हुआ जब उनके बड़े भाई ने उन्हें बताया कि यह है वह बड़े भाई साहब के समक्ष कह्ये मैं आ जाओ अर्थात परंतु अनुभव लाने में वह उनसे सहेल होता रहेगा और कितनी शुद्ध रूप से स्वतंत्रतृतीय अनुभव लाने हें। छोटे भाई को इस बात से लघुता का अनुभव इसलिए हुआ क्योंकि वह समझ गया कि उनका कितनी शुद्ध रूप से उनके अपने पिताजी जिन्हा अनुभव नहीं दिया सकता। उन्हीं इसी प्रकार वह अनुभव में अपने बड़े भाई साहब से छोटे रहेगा।

ख)
शुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की अपराध सहानुभूति भूमिका थी क्योंकि सीनुमेंट के नीचे स्त्री समाज ने इस बांध फहराकर शायद प्रस पढ़ी तथा लायी पढ़ने पर मद भी अपने स्थान पर उठाया लोग नहीं। उनकी गिरफ्तारी का मन नहीं था न ही लाठी की भार का। उन्होंने वह भारत के आंदोलन की आजी बढ़ता था। इस आंदोलन में १०० हजारों गिरफ्तार हुई तथा लाठी साफ़ होने के बाद वे दासी खेल के सीधे पर जुलूस तैयार बने गये। इस प्रकार शुभाष बाबू की गिरफ्तारी के बाद स्त्री समाज में हर जिम्मेदारी की अपने कंधों पर उठाकर आंदोलन की सफलता बनाया।
कर्मों आदि भी बिना सत्य के लाभ के बाहर से स्तव जो वह सिर्फ़ व्यवहारिकता की सहायता से कर पाए। इस सृंगे से व्यवहारिकता लोगा सफलता प्राप्त करते हैं तथा अपर लोग सत्य के खिलाफ़ परिचय आदर्शवादी सबकों साधा लेकर उपर उठते हैं तथा लोक-कल्याण व समाज कल्याण की समर्पण होते हैं।

कबीर ने सदैव मीठी तानी बोलने की सलाह दी है क्योंकि मीठी बोलने के अनेक लाभ होते हैं जोसे कि बोलने व शुनने वालों को सुख व आनंद की प्राप्ति होती हैं तथा मीठी तानी बोलने वाले का तन भी सशक्त, सकारात्मक व शीतलता प्राप्त करता है।

ख) ‘मनुष्यता’ कविता में उद्दर्श व्यक्ति की यही पहचान बताई गई है कि उसकी सदा सुन्दरता होती है, वह सबका हितवादी होता है, उसका बल्कि सरस्वती किताबों के रूप से कहती है तथा दर्शती भी उन्हें कृतार्थ भाव सानत है। इन व्यक्तियों के लिए कविता में आदर, सहानुभूति, दृढ़ता, सत्यतादृष्टि, बलि-दानी आदि भाव उपयोग किए गए हैं।
सा) 'आत्माकाव्य' कविता में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सहायक के न लिखने पर इतिहास भी इसी प्रारम्भ करते हैं कि उनका आनन्द तथा पुनःस्थापन को न हिले और वे उस अवस्था में भी अदराहं बच रहे।

मािरी पाठ्यपुस्तक 'रूपरी' के पाठ 'पर्वत प्रदेश से पावस्,' से 'कवि' सुनिता धानंदन पंत ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा का अनुष्ठान सुंदर व मनोहरक चित्रण करते हुए कहा है कि वर्षा तत्काल से पर्वत प्रदेश में प्रकृति फल-फल अपना वैष्णव बदल रही थी, कपड़े तेज़ वर्षा तो कपड़े तेज़ धूप हो जा रही थी। इन सब के ही सच अनेक में घड़कार घड़ों से बहता हुआ जल उनके चरणों में दृष्टन रूपी तालाब बना है रहा था जों हों से सहस्र सुमन रैली प्रतिवेद ही रहे थे कि पर्वतों के नेत्र बनकर वे उस दृष्टन में स्क्यूं का प्रतिवेद ही रहे हैं। उन पर्वतों से बहते हुए उनसे गीती की लोहियों से प्रतिवेद ही रहे थे। सत्य पर चारिं तरफ़ विभजली पारे की तरह अपने पर फैला रही थी। पर्वतों पर उपस्थित शूष्क ऊँची सहलकांकां को दिया रहे थे तथा कई शाल के वृक्ष मिट्टी में दूरते के भय ही
उससे दांस चुके थे। चारों तरफ बरसते जल के कारण जो धूआं ऊठ रहा था उससे रसा लग रहा था भागी वापित श्रद्धा जल रहा है। चारों तरफ के सामने में सिरे बने हुए झरनों की आवाज थी। शीष रह गई थी। इस प्रकार उसे देखते ही रहा था कि इंद्र देव अपनी सबसे पर विचार-विचार आजुई केले दिखा रहे हैं।

"अनपढ़ होते दुरा भी हरिहर काका दुनिया की अच्छी समझ रखते हैं।" हमारी पुस्तक पृष्ठ "संचयन" के पार "हरिहर काका" में लेखक भी बिधिवतः ने उसके मक्खी के बयां की ख्याति है। हरिहर काका के पास पंढर बिगड़ी जमीन थी। उस जमीन पर गंगुलिहार के समीप उसे अपने तीन भाईयों की दराज बनाया था। उन दोनों की तरफ से हरिहर काका की जमीन उनके नाम करने का प्रताप कर दिया था। आपस में प्रेम करते उन्हीं उसे कहा कि स्वीकार करें क्योंकि अनपढ़ होते दुरा भी उन्हीं अनुभव शान बनाई था। वे जानते थे कि अगर उन्हीं अपनी जमीन किसी के जिनको उनके बाद उनसे पूछना बंद कर देंगे। उन्होंने इसका प्रत्यय उदाहरण अपने घाव में ही स्मृति की निदान के साथ भी देखा था जिनके
पुत्रों ने अपने ज़मीन अपने नाम करवाने के बाद उन्हें दूध की सब्ज़ी की स्वादिष्ट निकाल फेंका था। इसी कारण दोनों पत्नी दूराच्छ रहने के बाद उन्होंने अपनी ज़मीन किसी के नाम नहीं की। यह दर्शाता है कि तीन अनपढ़ धर्मित श्री समाज में ही ते नकारात्मक बदलावों की अपने अनुभव दूराच्छ सब्जियों से श्री बचा रह सकता है तथा समाज की कुनौतियों से श्री बचा रह सकता है। अभी कारण है कि दोहरे कारक ने अपने जीवन के विभिन्न दृष्टियों के नाम नहीं की क्योंकि उन्हें अपने अनुभव ज्ञान से दुनिया की अस्तित्व समाज हो चुकी थी।

(कृपया पढ़ें उल्लेख)

अनुच्छेद लेखन –

कष्ट - घ
समय का सदुपयोग

समय बहुत ही मूल्यवान वस्तु है और समय किसी के लिए नहीं रुकता। जो वक्त रहते समय का सदुपयोग नहीं करता वह जीवन में सर्दी बढ़ाता है। समय का सदुपयोग करने वालों इसने जीवन में सदा उन्नति करता है। समय का सदुपयोग कई तरह से किया जा सकता है वक्त रहते अपना कार्य पूर्ण करके, मोबाइल, टीवी में समय त्याग करके। रेड मनुष्य का इंतजार उसका करना होता है जिसकी अपनी समय के अनुपाम होता है। मनुष्य अगर अपना रख लेते हैं। कभी पर केंद्रित करता है। वह समय का सदुपयोग करता है। समय के दुर्कुपायोग के भी अनेक खतरे हैं। जिसे अयोग्य समय के दुरुपयोग से मनुष्य का पूर्ण जीवन बहुत ही सकता है। मनुष्य के रक्षाभर की भी इसी का बहुत बड़ा खतरा है। और अधिक समय मोबाइल पर द्वारका करने से और अपना कार्य पूर्ण न करने से मनुष्य के आँखों की नुकसान पहुँचता है। रेड समय साशंक का पालन न करके मनुष्य अपना कोई भी कार्य समय पर दे नहीं कर पाते और अशक्तता प्राप्त करता है। जो समय का आदेश दे सदुपयोग करता है वह जीवन नहीं है।
प्र०-२४ औपचारिक पत्र लेखन -

परिसर भवन
अंबेडकर विद्यालय
कोबोडा नगर

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम
कोबोडा मा० नगर

दिशा - बस्ती में आवारा कुट्टों समस्या के निवारण हेतु पत्र।

मान्यता,

मैं कोबोडा मा० नगर की चारसौ जोर बस्ती का निवासी हूँ तथा आवारा कुट्टों के कारण ही रही समस्याओं से आपकी अवगत करना चाहता हूँ। हमारी बस्ती में आप दिन कोई - न - कोई क्यों हर कारण आवारा कुट्टों का विकास ही रहा है तथा उन्होंने हमारी बस्ती की एक बड़ी की गब्बर को हुआ भी कर दी है। वे हर रोज हमारी बस्ती में कुछ फैला देते हैं, तथा उनका सल - सूत्र नहीं ही बनायेंगे का कारण बन रहा है।
अतः मेरा आपसे यह अनुशीलन है कि जबकि के-जबकि इन आवास कुलों हेतु नरा आवास हेतु कार्य आरंभ किया और तथा इससे प्रभावित लोगों की चिकित्सा हेतु धन-राशि प्रदान की जाय।

सधर्मवाद।

अद्वैत, तौर हड़

पृ.-७७

सूचना लेखन
मूवा
अबोबो सात विद्यालय
कोरोबोरो नगर

96 मार्च, 2017

सर्वसाधारण की सूचित किया जाता है कि विद्यालय "वर्षिका-सत -2017" संवारणा जिसकी आयोजिती निर्मापित है -
निम्न - 31 मार्च, 2017
समय - प्रातः 10 बजे से सायं 12 बजे तक
स्थान - येल मैदान, अबोबो सात विद्यालय, कोरोबोरो नगर।
इस कार्यक्रम में नृत्य, संगीत, कला आदि कलाकारों से भाग लेने हेतु इतना छात्र अपना नाम येल मैदान से सूचित की लिखवाएं।
100004
सूचित
छात्र केल्याण - परिषद्
संवाद लेखन -

मित्र 1 - राम  
मित्र 2 - रमेश

राम - अरे। रमेश तुम भी यह चलचित्र देखने यहाँ आए थे?
अगर मुझे बताते तो हम साथ चलते।

रमेश - प्रणाम मित्र! मुझे नहीं पता था कि तुम्हें चलचित्रों में सुखे हैं, मैं तो तुम्हें किताबी कीड़ा समझता था।

राम - नहीं मित्र, रमेश नहीं हैं। मैं वे चलचित्र अवश्य देखता हूँ। जो शामाज की रक्कम आदा सड़क हैं। इन चलचित्रों में मैं और लोगों की भी अवगत करता हूँ।

रमेश - यह तो अदभुत होता हैं। मैं इस चलचित्र की दूसरी बार देख रहा हूँ। मैं जब भी हैं इस चलचित्र की देखता हूँ। तो मेरे अंदर देश के लिए कुछ करने की सम्मान जाती है।
राम  - यह तो अच्छी बात है। वे से इस चलचित्र में दृश्य प्रथा के बारे में बताया गया है। क्या तुम इस प्रथा से विरास्त रखते हो?

रामेश  - बिल्कुल नहीं। सिता। राक्षसा ही उसके माता-पिता का दिखा। सबसे बड़ा दृश्य होता है। उससे अधिक केसी इंशान की क्या चाहिए?

राम  - बिल्कुल अच्छा मिला। परंतु मुझे अफसोस है इस बात का ही। क्योंकि समाज में इसका प्रभावण आज भी है।

रामेश  - मित्र, कई बार तो मे। यह सोचता हूँ कि इन चलचित्रों का सकरसस्तु तब तक अधूरा रहेगा। जब तक समाज इससे बदलना नहीं आएगा।

राम  - बली मित्र। अब हम ही यह पहल करेंगे, तथा कल से और हमारी स्वतंत्र आधुनिक की आज्ञा लेकर सबकी आवश्यक करने चलेंगे। और शुक्रुआत करेंगे। अपनी बस्ती से।
रूपान्तरण की है। तू सिन्धु अब केंडा मिले हैं।
हस रक नह रक्षाह तथा मरी उम्मीद है। शुभ श्राद्ध।

प्रौं 9:10

विद्यापित लेखन -

पुराने सकार से नये का शोभा।

वह आलीशान सकार अब बनते कम झाय ने।
सिफ़े - '50 लाख

पहिले आएं
पहिले पढ़ें

हैली के अतर वर भारी छुटें

1 जोधपुर
2 शीतल कय तथा 3 प्रबुद्ध

शहर से अपना घर हो तो शहर से अपना लगता है।

अब अपनी हैली ना दाद से!!

मो - 9860674590